यात्रा वृतांत

कुछ अलग, प्राकृतिक और अनदेखा देखना चाहते हों तो राजदरी देवदरी जरूर जाएं

अद्भुत, अतुल्य: राजदरी देवदरी वाटरफॉल

प्रस्तुति: मृदुल कपिल साहित्यकार कानपुर

बीच बारिश अचानक तीन की छुट्टी का उपहार मिलते ही घुमक्कड़ मन कहीं घूमने के लिए मचल उठा। बरसात में कम बजट और कम समय में कहां की यात्रा की जाए, इस सवाल के जवाब में अचानक एक मित्र की कही बात याद आ गई 'कभी बरसात में हमारे चंदौली चलना, सब भूल जाओगे।' फिर क्या था, उसी शाम कार से कानपुर से 350 किमी दूर चंदौली के लिए निकल पड़े। करीब साढ़े पांच घंटे बाद हम मित्र के गांव में थे। अगली सुबह जब बादलों के बीच सूरज की नर्म किरणों ने जगाया तो हमने चारों तरफ फैली हरियाली के बीच चंद्रप्रभा अभयारण्य की यात्रा आरम्भ की। अचानक से एक खेत से लगी राजबाहा जिसे स्थानीय भाषा में 'बियर' कहते हैं दिखा। यहां तेज पानी में कुछ लड़के गोता लगा रहे थे। मित्र ने बताया कि यह मुजफ्फरपुर बीयर है। इससे ही जुड़ा है देश के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का गांव। कुछ कच्ची पक्की सड़कों से गुजरने के बाद अब हम एक और बीयर में थे। इसे लतीफ़ शाह डैम कहते हैं। यहां एक सूफी संत लतीफ़ शाह की मजार है। डैम से पानी तो नहीं गिर रहा था पर दृश्य मनमोहक था। हम आगे बढ़ते हैं। सुनसान सड़क और खामोशी से खड़े पेड़ हमारा इस्तकबाल करते हैं। यहां फिजा में कुछ अलग-सा सन्नाटा है। सुनसान रोड पर सिर्फ हमारी कार थी। करीब 40 मिनट बाद हम चंद्रप्रभा अभयारण्य के गेट पर खड़े थे।

एशियाई शेरों को संरक्षण देने के लिए की गई थी इसकी स्थापना

- इस अभयारण्य की स्थापना 1957 में एशियाई शेरों को संरक्षण देने के लिए की गई थी। शेरों के अलावा यहां साही, काले हिरण, चीतल, जंगली सुअर, सांभर, नील गाय और भारतीय चिंकारा जैसे कई अन्य जानवर भी मिलते हैं। यहां घड़ियाल और अजगर जैसे रेंगने वाली प्रजाति के जीव भी पाए जाते हैं। यह अभयारण्य पक्षी प्रेमियों को खुश करने वाला है। यह 150 से अधिक देशी और प्रवासी पक्षियों को आकर्षित करता है। यहां की मुख्य वनस्पति शुष्क पर्णपाती वन है। पूरा अभयारण्य 78 स्क्वायर किलोमीटर में फैला है और विंध्याचल पर्वत श्रेणी की नौगढ़ और विजयगढ़ पहाड़ियों पर स्थित है। अभयारण्य में प्रवेश के उपरान्त हम फिर खाली और सुनसान सड़क पर करीब 2 .3 किलोमीटर चलते हैं। आगे बोर्ड चमकता दिखता है, राजदरी झरना पार्किंग स्टैंड। हम गाड़ी पार्क करते हैं । पानी गिरने का तेज कोलाहल यहीं से सुनाई देने लगता है। अब हमारे सामने है उत्तर प्रदेश का सब से विशाल प्राकृतिक झरना यानी 'राजदरी'।

आने के बाद मन उठेगा बस यह सवाल

- ...अरे! ये तो कमाल है । मैं अब ... तक यहां क्यों नहीं आया? मैं खुद से सवाल करता हूँ। सामने विहंगम दृश्य है । मैंने अपने घुमक्कड़ जीवन में कई झरने देखे हैं पर ये झरना एकदम अलग और विशाल है। जलप्रपात के तेज शोर के साथ-साथ साथ चंद पर्यटकों की हंसी माहौल में गूंज रही है और मैं मिर्जापुर तथा चंदौली की सीमा पर स्थित राजदरी के इस अनछुए सौन्दर्य में खो-सा रहा हूं। सच में इसका सौन्दर्य हमारी सोच से अधिक है। इतने पानी को देखकर खुद को संभालना मुश्किल है। हम आगे निकल कर छिछले पानी की तरफ जाते हैं । यहां कई सारे लोग कंडा-लकड़ी सुलगा कर 'चोखा-बाटी' बना रहे हैं । हम थोड़ा तेज बहाव वाले छिछले पानी में हैं। पानी शिलाओं के उपर से गुजर रहा है । शायद दो घंटे तक हम और पानी एक दूसरे से खेलते रहते हैं। इसके बाद चंद्रप्रभा अभयारण्य में आगे बढ़ते हैं। हम अब देवदरी वाटर फाल को देख रहे हैं। दोनों तरफ से घिरी पत्थर की हरी शिलाएं और उनको काटकर कल-कल बहते पानी की स्वर्णिम धार। तेजी से गिर रहे पानी की वजह से एक तेज धुंध का बादल व्योम को ढकता-सा लग रहा है। दिल में ख्वाहिश जगती है, काश मेरे भी पंख होते ...तो आज इस ...बहते पानी के साथ उड़ जाता। देवदरी का सौन्दर्य हमें एक अलग सम्मोहन में जकड़ लेता है। कुछ देर बाद हम चन्द्रप्रभा डैम पर पहुंचते हैं। क्षितिज के अंत में जल, थल, नभ मिल रहे हैं। न कोई शोर न हलचल । हां! डैम के गेट जरूर यह एहसास करा रहे हैं कि मनुष्य अब प्रकृति पर भी नियंत्रण लगाने लगा है। थोड़ी देर बाद शाम घिरने लगती है, अब हमे काशी वापसी करनी है। हमारी कार पतली सड़कों पर तेजी से भाग रही है और पीछे छूट रहा है एक कभी न भूल सकने वाला अद्भुत और सच्चा सौन्दर्य।

कुछ जरूरी बातें याद रखें

यहां घूमने का मुख्य सीजन बारिश का ही है। ये दोनों वाटरफॉल बनारस से करीब 55 किलोमीटर की दूरी पर हैं। यहां पर रुकने लायक अभी अधिक स्थान नहीं हैं। आप चाहे तो बनारस में ठहर सकते हैं। चन्द्रप्रभा अभयारण्य में प्रति व्यक्ति प्रवेश शुल्क 50 रुपये है और कार का 100 रुपये अतिरिक्त देना होता है।

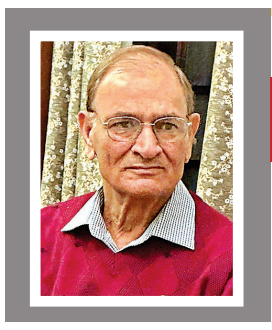

ओम प्रकाश त्रिपाठी
सेवानिवृत्त आईजी (यूपी पुलिस)
लखनऊ

संस्मरण

एक और एफआईआर

घटना वर्ष 1979 के आसपास की है। वाराणसी से सीबी सीआईडी मुख्यालय मीटिंग के लिए बुलाया गया था। उन दिनों यह मुख्यालय विक्रमादित्य मार्ग स्थित पंच बंगलिया नाम से प्रसिद्ध पांच बंगलों में से एक में हुआ करता था। तब इस रोड पर न तो कोई राजनेता रहता था न कोई राजनैतिक गतिविधि ही थी। हजरतगंज चौराहे से मुख्यालय तक जाने के लिए रिक्शा भी कभी-कभार नहीं मिलता था क्योंकि इस रोड पर आवाजाही न होने के कारण वापसी में रिक्शे वालों को सवारी मिलने की उम्मीद बहुत कम रहती थी। लिहाजा कभी-कभी लगभग डेढ़ किमी की यह दूरी पैदल ही तय करनी पड़ जाती थी। उन दिनों सीबी सीआईडी मुख्यालय के लान का रखरखाव बहुत अच्छा हुआ करता था। झक हरी मुलायम नरम घास वाले लान के चारों ओर व केंद्र में खिले हुए गुलाब की क्यारियों से शरद ऋतु के शांत वातावरण में गुलाबी धूप का आनंद अत्यंत सुखद अहसास था।

बहुधा वरिष्ठ अधिकारी लंच के समय लान में मंडलाकार कुर्सी डलवा कर बैठते थे । उन दिनों सीआईडी में टीम भावना से कार्य होता था और वरिष्ठ अधिकारी मातहतों से काफी आत्मीय व्यवहार करते थे। लंच के समय बाहर से आए हुए अधिकारियों को अपने साथ बिठा लेते थे। लंच का मीनू ज्यादातर हरी मिर्च के साथ ताजा भुना हुआ लाई चना से लेकर समोसा चाय तक ओपन था। लंच के समय लान में बिल्कुल अनौपचारिक माहौल होता था और उस दिन की चटपटी घटनाओं विशेषकर पुलिस विभाग से संबंधित खबरों व मामलों में खुलकर अनौपचारिक चर्चा होती थी। उस दिन कानपुर से प्रकाशित किसी दैनिक समाचार पत्र में "...और डकैत जज साहब की जय बोलते हुए चले गए, शीर्षक समाचार छपा था जिस पर विमर्श जारी था।

कानपुर देहात में यमुना के बीहड़ से सटे हुए थानों में डकैती की गंभीर घटनाएं पुलिस के लिए बड़ी चुनौती थी। उसी समय थाना घाटमपुर या भोगनीपुर में हुई एक डकैती की प्रथम सूचना रिपोर्ट में वादी ने पूरी घटना का लिखित विवरण देने के साथ ही अंत में यह भी लिखा था और लूटपाट करने के बाद जाते समय डकैत जज साहब की जय बोलते हुए चले गए " यह वाक्य हर ओर चर्चा का विषय बना हुआ था। मामला यह था कि उन दिनों डकैती की घटनाओं में पकड़े गए संदिग्ध अभियुक्तों +को कार्यवाही शिनाख्त के लिए बा पर्दा जेल भेजा जाता था। पुलिस द्वारा छह माह में कार्यवाही शिनाख्त पूरी न कराने पर ज्यादातर मामलों में अभियुक्तों को सशर्त जमानत मिल जाती थी। कभी-कभी पुलिस द्वारा जानबूझकर कार्यवाही शिनाख्त कराने में इसलिए विलंब किया जाता था कि इसी बहाने अपराधी कम से कम 6 माह तक जेल में बने रहेंगे और अपराध में कमी आएगी। डकैती के मामलों के जज साहब कुछ स्वतंत्र विचार के थे। अपने न्यायिक अधिकार के तहत वे ज्यादातर मामलों में कार्यवाही शिनाख्त लंबित रहने पर भी दो-तीन माह में अभियुक्तों को सशर्त जमानत दे देते थे। इससे न केवल अपराधियों में पुलिस का खौफ कम हुआ था बल्कि डकैती की घटनाएं बढ़ रही थी और थानाध्यक्ष की विभागीय फजीहत भी हो रही थी। उन्हें कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। बेहद परेशान हालत में अपनी कुर्सी खतरे में नजर आ रही थी। डकैती की अगली घटना होने पर थानाध्यक्ष ने वादी को अपनी हिकमत अमली से हमवार करके उसके द्वारा दी गई तहरीर में यह भी लिखवा दिया कि जाते समय डकैत जज साहब की जय बोलते हुए चले गए। इस पर पुलिस व न्यायिक अधिकारियों के बीच तनातनी व हंगामा होना स्वाभाविक था और हुआ भी लेकिन तकनीकी दृष्टि से वादी के हमवार होने के कारण थानाध्यक्ष जांच में अपने को बचाने में सफल रहे। जाहिर है कि उसके पश्चात जज साहब डकैतों की जमानत देने में उतने उदार नहीं रह सके ।

कानपुर के डॉक्टर दंपती ने छत को बना दिया खेत, बड़ी मात्रा में उगा रहे बिना पेस्टिसाइड वाली आर्गेनिक सब्जियां और फल

शौक, सेहत और स्वाद का खजाना बना टेरेस गार्डन

टेरेस गार्डन के शौक में कानपुर के एक प्रसिद्ध डॉक्टर दंपति ने पांच साल की मेहनत से अपने घर की छत को खेत में बदल दिया। उनकी छत पर अब सभी तरह की मौसमी सब्जियां उगाई जाती हैं। डॉ. अनुराधा गुप्ता व डॉ. निखिल गुप्ता हरी पत्तेदार सब्जियों के अलावा आलू, टमाटर, शकरकंद, गोभी जैसी अनेक सब्जियों की खेती कर रहे हैं। पिछले सीजन में उन्होंने 40 किलो आलू की पैदावार का रिकार्ड बनाया था। डॉक्टर दंपति का कहना है कि टेरेस गार्डन का शौक अब सेहत और स्वाद में बदल चुका है। थोड़ी सी मेहनत से बिना पेस्टिसाइड वाली आर्गेनिक सब्जियों के साथ प्रकृति के करीब रहने का शौक पूरा हो रहा है।

सिविल लाइंस स्थित डॉक्टर दंपति ने अपने घर और नर्सिंग होम की छत पर आकर्षक फूलों वाले पौधों के साथ हर तरह का मौसमी सब्जियां उगाने का इंतजाम कर रखा है। डॉ. निखिल गुप्ता ने बताया कि इस गार्डन की उन लोगों ने कोविड काल में शुरुआत की थी। प्रकृति के साथ जुड़ने का यह संस्कार उनकी पत्नी को मायके से मिला था।

कोविड के दौरान घर पर रहने से शौक तेजी से परवान चढ़ा। आज स्थिति यह है कि उनके यहां इतनी सब्जियां व फल मिलते हैं कि उन्हें सब्जियां खरीदने के लिए बाजार नहीं जाना होता है। डॉ. अनुराधा गुप्ता ने बताया कि मायके से मिले हुनर को उन्होंने कोरोनाकाल के दौरान घर की छत पर इस्तेमाल किया। अब उनके यहां हर तरह की पत्तेदार और मौसमी सब्जियों सहित मौसमी फल उगाए जाते हैं।

प्रस्तुति: राजीव त्रिवेदी, कानपुर

न्यूनतम मिट्टी के साथ खुद की बनाई खाद का इस्तेमाल

- डॉ अनुराधा गुप्ता ने बताया कि तीन हजार स्क्वायर फिट में दो फ्लोर की छत पर बना बगीचे में पौधों को उगाने के लिए वे मिट्टी का कम से कम इस्तेमाल करती हैं। गमलों में वे घर की सब्जियों से निकला 'वेस्ट', पार्क में गिरने वाली पत्तियां, चावल की भूसी और गोबर की खाद का प्रयोग करती हैं। इससे कचरा प्रबंधन के साथ ही सब्जियों की उपज भी बढ़िया होती है।

छत पर भार न पड़े, इसलिए बनवाए तिरपाल के गमले

- पौधों की संख्या अधिक होने पर छत पर बोझ अधिक न पड़े इसके लिए डॉक्टर दंपति ने मिट्टी या सीमेंट के गमलों का इस्तेमाल नहीं किया। इससे छत पर भार अधिक होने का खतरा था। उन्होंने आर्डर देकर तिरपाल के स्पेशल गमले बनवाए। इनका इस्तेमाल सब्जियां और फल उगाने के लिए किया।

कीटनाशक की जगह नीम के तेल का इस्तेमाल

- छत में उगने वाली सब्जियों का स्वाद बाजार में मिलने वाली सब्जियों से अलग होता है। इसकी वजह इन सब्जियों का ताजा होना और पेस्टिसाइड का प्रयोग न होना है। डॉक्टर दंपति सब्जियों में कीटनाशक के रूप में नीम के तेल का प्रयोग करते हैं। इससे वह सेहत के लिए पूरी तरह से सुरक्षित रहती हैं।

...जीवन रहने तक बचाएंगे मरीजों की सांसें

एडी हेल्थ पद से सेवानिवृत्त डॉ. एसके गर्ग कहते हैं कि सेवानिवृत्ति नौकरी से होती है न कि सेवा से। डॉ. गर्ग ने इस मूलमंत्र को अपने जीवन का आदर्श बना लिया है। दो जिलों में बतौर सीएमओ रहकर चेस्ट फिजिशियन के रूप में मरीजों की सेवा की। यह सेवा निरंतर जारी है। सेवानिवृत्त होने के बाद भी डॉ. गर्ग अपने घर में क्लीनिक खोलकर मरीजों का नि:शुल्क इलाज कर रहे हैं। डॉ. एसके गर्ग ने अपने सेवा भाव से जुड़े कई संस्मरण अमृत विचार से साझा किए ...

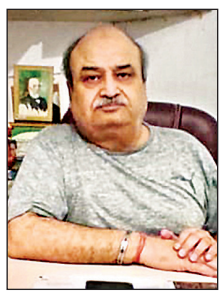

एमबीबीएस की पढ़ाई पूरी करने के बाद वर्ष 1988 में लखनऊ के किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज (अब केजीएमयू) में विशेषज्ञता में एमडी चेस्ट की पढ़ाई कर रहा था, चूंकि कॉलेज में 300 बेड अस्पताल में भर्ती मरीजों को इलाज देने की जिम्मेदारी बतौर रेजिडेंट डॉक्टर मुझे दी गई थी। कॉलेज आते वक्त नई मोटर साइकिल का टायर पंक्चर हो गया। देर रात में इधर-उधर ताकने लगा, लेकिन सड़कों पर सन्नाटा पसरा हुआ था। इसी बीच स्कूटर पर सवार युवा मेरे पास आकर रुका और बोला डॉक्टर साहब नमस्कार, मैं चौंक गया कि ये मुझे कैसे जानता है। उसने जो बात कही वह आज भी जेहन में जिंदा है। उसने कहा आपके इलाज से ही मेरे पिता आज टीबी जैसी बीमारी से स्वस्थ हो गए हैं। उसने इतनी रात में बाइक का टायर खोलकर दूर कहीं से पंक्चर जुड़वा कर मेरी बाइक में खुद टायर लगाया... ऐसे कई वाकया जीवन में हुए, जिसने मेरे डॉक्टर बनने के निर्णय को सार्थक कर दिया।

दरअसल, मेरे पिता सोहन लाल सरकारी विभाग में इंजीनियर थे। दादा मुझे भी पिता की तरह ही इंजीनियर बनाने को प्रेरित करते, लेकिन पिता जब भी किसी सरकारी अस्पताल में निर्माण संबंधी कार्य के लिए जाते तो डॉक्टर को देखकर प्रभावित होते थे और मुझे डॉक्टर बनने के लिए कहा करते थे। मैंने वर्ष 1988 में चेस्ट फिजिशियन की पढ़ाई पूरी करते ही स्वास्थ्य विभाग में सेवाएं आरंभ कर दीं। फिर मरीज हित को ही कर्तव्य मानकर हर दायित्व का निर्वहन किया। मेरी सांसें चलने तक मरीजों की सांसें बचाने का पुनीत कार्य जारी रहेगा। वह बताते हैं कि शाहजहांपुर और बरेली में बतौर मुख्य चिकित्सा अधिकारी जैसे शीर्षस्थ पदों पर आसीन होने से पहले एक डॉक्टर और मरीज के प्रति सेवा के भाव को सार्थक कर दिया था। मैंने वर्ष 1998 से 2004 तक बरेली जिला अस्पताल में टीबी वार्ड प्रभारी रहकर मरीजों का इलाज किया, वहीं 2017 से 2020 तक बरेली में ही जिला क्षय रोग अधिकारी रहते हुए व्यापक रूप से अभियान चलाकर 50 हजार से अधिक टीबी के लक्षण वाले रोगी नोटिफाई किए। जो कि अब तक का सबसे अधिक आंकड़ा है। वह कहते हैं कि नौकरी के हर दायित्व से उन्हें कुछ न कुछ सीख मिली। जिला क्षय रोग केंद्र पर घंटों मरीज इंतजार करने के बाद उनके पास पहुंचते थे। इसके बाद कम समय देने पर मरीज झल्ला जाते थे, गुस्सा करते थे। इस पर मेरे मन में टीस उठी क्यों न इन मरीजों को घर पर ही बुलाकर देखा जाए। उन्होंने बरेली के अपर निदेशक चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण (एडी हेल्थ) के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद वर्ष 2022 से घर पर ही क्लीनिक खोलकर टीबी रोगियों का निःशुल्क इलाज करना आरंभ कर दिया जो कि वर्तमान में भी जारी है। चौपुला चौराहा स्थित अपने निजी निवास पर रोजाना 30 से 40 मरीजों को क्लीनिक पर ही इलाज दे रहे हैं।

बताते हैं कि किसी भी ऐसे क्षेत्र से जुड़ा पेशेवर जो कि समाज हित में कार्य कर चुका हो उसको अपनी सेवाएं आरंभ रखनी चाहिए। उनका मानना है कि सेवानिवृत्त नौकरी से होते हैं न कि सेवा से, इसलिए जब तक जिंदगी है मरीजों की सांसें बचाएंगे। डॉ. गर्ग बताते हैं कि करीब तीन साल से वह रोजाना सुबह 11 बजे आवास पर बने क्लीनिक पर बैठ जाते हैं और मरीजों के आने का सिलसिला जारी हो जाता है। बीती 16 जुलाई को राज्य क्षय रोग अधिकारी ने उन्हें पत्र भेजकर सेवा भाव की सराहना की। साथ में, डॉ. गर्ग की तरह चेस्ट विशेषज्ञों की सूची भी देने का आग्रह किया जो कि निशुल्क सेवा प्रदान करने के इच्छुक हैं।